(2) **पण्डित** समझदारी से और.....एक करके पूरा कर लिया।
(3) सज्जन व्यक्ति **शत्रु** और.....नासमझी से कार्य करते हैं।
(4) महापुरुष **ममत्व** तथा.....को समान समझते हैं।
(5) संसार में **सुख** और....., **जन्म** और.....की भावना नहीं रखते हैं।
का क्रम बना रहता है।

उत्तर–(1) पाताल, (2) मूर्ख, (3) मित्र, (4) परत्व, (5) दुःख, मृत्यु।

3. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्द ध्वनि और उच्चारण की दृष्टि से समान प्रतीत होते हैं। ऐसे शब्दों के प्रायः युग्म-रूप होते हैं तथा इनमें समानार्थकता-एकार्थकता का आभास होता है। ऐसे शब्दों को—(1) समोच्चरित एकार्थक तथा (2) एकार्थ भिन्नार्थक कहा जाता है।

(1) श्रुति समभिन्नार्थक (समोच्चरित) शब्द

यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द दिये जा रहे हैं—

	शब्द	अर्थ
1.	अनल	आग
	अनिल	हवा
3.	अविराम	लगातार
	अभिराम	सुन्दर
5.	अंस	कन्धा
	अंश	हिस्सा
7.	अविज्ञ	मूर्ख
	अभिज्ञ	विद्वान्
9.	अन्य	दूसरा
	अन्न	अनाज
11.	अभिनय	अनुकरण
	अभिनव	नया
13.	अम्बुज	कमल
	अम्बुद	बादल
15.	अभय	निडर
	उभय	दोनों
17.	आभरण	गहना
	आवरण	ढकना
19.	अनिष्ट	बुरा
	अनिष्ठ	निष्ठाहीन
21.	अरि	शत्रु
	अरी	सम्बोधन (स्त्री.)
23.	आसन	बिछौना
	आसन्न	समीप

	शब्द	अर्थ
2.	अनु	पीछे
	अणु	छोटा
4.	अर्चन	पूजा
	अर्जन	संग्रह
6.	अवलम्ब	सहारा
	अविलम्ब	शीघ्र
8.	अन्त	समाप्त
	अन्त्य	अन्तिम
10.	अविहित	अनुचित
	अभिहित	कथित
12.	अलि	भौंरा
	आली	सखी
14.	आकर	खजाना
	आकार	बनावट
16.	अम्ब	आम्र वृक्ष
	अम्भ	जल
18.	आदि	प्रारम्भ
	आदी	आदत
20.	अर्घ	मूल्य
	अर्घ्य	पूजा
22.	अशक्त	कमजोर
	आसक्त	मोहित
24.	अहि	सर्प
	अह	दिन

25.	अचार	आम आदि का अचार
	आचार	आचरण
27.	इति	समाप्ति
	ईति	दैवी आपत्ति
29.	उद्धत	उद्दण्ड
	उद्यत	तैयार
31.	उद्योत	प्रकाश
	उद्योग	उपाय
33.	ओर	तरफ
	और	दूसरा
35.	कच	बाल
	कुच	स्तन
37.	कृत	किया हुआ
	क्रीत	खरीदा हुआ
39.	कृती	चतुर
	कृति	रचना
41.	कीट	कीड़ा
	कटि	कमर
43.	कलि	कलियुग
	कली	कोंपल
45.	गृह	घर
	ग्रह	नक्षत्र
47.	घन	बादल
	घना	गाढ़ा
49.	चरण	पैर
	चारण	एक जाति
51.	छात्र	विद्यार्थी
	क्षात्र	क्षत्रिय सम्बन्धी
53.	जलद	बादल
	जलज	कमल
55.	तरणि	सूर्य
	तरणी	नाव
57.	दारा	स्त्री
	द्वारा	माध्यम
59.	दिन	दिवस
	दीन	गरीब
61.	द्विप	हाथी
	द्वीप	टापू
63.	धरा	पृथ्वी
	धारा	प्रवाह
65.	नीर	पानी
	नीड़	घोंसला
67.	निर्झर	झरना
	निर्जर	देवता

26.	अचल	पर्वत
	अचला	पृथ्वी
28.	उधार	ऋण
	उद्धार	मुक्ति
30.	उर	हृदय
	उरु	विस्तृत, बड़ा
32.	एव	ही
	एवं	और
34.	कटक	सेना
	कंटक	काँटा
36.	कुल	वंश
	कूल	किनारा
38.	कोर	किनारा
	कौर	ग्रास
40.	क्रम	सिलसिला
	कर्म	कार्य
42.	केसर	सिंह की जटा
	केशर	सुगन्धित पत्तियाँ
44.	खर	गधा
	खुर	पशु के खुर
46.	गर्व	घमण्ड
	गर्भ	आन्तरिक भाग
48.	चर्म	चमड़ा
	चरम	अन्तिम
50.	छत	छत/छान, छापर
	क्षत	घाव
52.	ज़रा	थोड़ा
	जरा	बुढ़ापा
54.	तरंग	लहर
	तुरंग	घोड़ा
56.	तर्क	बहस
	तक्र	छाछ
58.	द्रव	तरल पदार्थ
	द्रव्य	धन
60.	दग्ध	जला हुआ
	दुग्ध	दूध
62.	दशा	अवस्था
	दिशा	ओर
64.	धनी	धनवान्
	धणी	स्वामी
66.	नारी	स्त्री
	नाड़ी	नब्ज
68.	निधन	मृत्यु
	निर्धन	गरीब

69.	निन्दा	बुराई
	निद्रा	नींद
71.	नक्र	मगरमच्छ
	नर्क	नरक
73.	नम्र	विनीत
	नरम	कोमल
75.	प्रसाद	कृपा
	प्रासाद	महल
77.	पथ	रास्ता
	पथ्य	स्वास्थ्यप्रद वस्तु
79.	पुरुष	मनुष्य
	परुष	कठोर
81.	प्रथा	परम्परा
	पृथा	कुन्ती
83.	प्रकृत	यथार्थ
	प्रकृति	स्वभाव
85.	प्रहार	चोट
	परिहार	समाधान
87.	प्रमाण	सबूत
	प्रणाम	नमस्कार
89.	पता	स्थान-सूचक
	पत्ता	पेड़ का पत्ता
91.	बलि	भेंट
	बली	बलवान्
93.	मद	अभिमान
	मद्य	शराब
95.	मातृ	माता
	मात्र	केवल
97.	वसन	वस्त्र
	व्यसन	बुरी आदत
99.	व्रत	उपवास
	वृत्त	घेरा
101.	व्यंजन	खाद्य वस्तुएँ
	व्यजन	पंखा
103.	वारिद	बादल
	वारिधि	समुद्र
105.	शकल	मुँह की बनावट
	सकल	सब
107.	शंर	बाण
	सर	तालाब
109.	स्व	स्वयं
	श्वा	कुत्ता

70.	निर्माण	रचना
	निर्वाण	मोक्ष
72.	नम	गीला
	नमः	नमस्कार
74.	प्रकार	तरीका
	प्राकार	परकोटा
76.	पावस	वर्षा
	पायस	खीर
78.	प्रवाह	बहाव
	प्रभाव	महत्त्व
80.	प्रणीत	रचित
	परिणीत	विवाहित
82.	पाणि	हाथ
	पानी	जल
84.	पवन	हवा
	पावन	पवित्र
86.	प्रतिहार	द्वारपाल
	प्रत्याहार	निवारण
88.	प्रमत्त	मदमस्त
	प्रमदा	स्त्री
90.	परिणाम	नतीजा
	परिमाण	मात्रा
92.	भाग	हिस्सा
	भाग्य	तकदीर
94.	मूल	जड़
	मूल्य	कीमत
96.	लक्ष	लाख
	लक्ष्य	निशाना
98.	विष	जहर
	विस	कमलनाल
100.	वृन्द	समूह
	वृन्त	डण्ठल
102.	वाम	टेढ़ा
	वामा	स्त्री
104.	व्याध	शिकारी
	व्याधि	रोग
106.	शंकर	शिव
	संकर	मेल
108.	शुल्क	फीस
	शल्क	छाल
110.	शिति	श्याम
	सित	सफेद

उत्तर–(1) आँधी आ रही थी—प्रधान उपवाक्य। यह अन्य वाक्य से संयु... **घर नहीं आ सका**—परिणामबोधक उपवाक्य।

प्रधान उपवाक्य का दूसरा वाक्य समानाधिकरण है। इन दोनों में 'इसलिए' संयोजक शब्द है।

(2) हम कोई काम करना चाहते हैं—प्रधान उपवाक्य। अन्य वाक्य से संयुक्त। **परन्तु उसको जानते नहीं हैं**—विरोधसूचक उपवाक्य।

प्रधान उपवाक्य द्वितीय उपवाक्य का समानाधिकरण है। इन दोनों के मध्य में 'परन्तु' संयोजक शब्द है।

5. पर्यायवाची, विलोम तथा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

हिन्दी भाषा का शब्द-भण्डार अत्यन्त समृद्ध एवं विशाल है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बँगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के शब्दों के साथ ही अनेक विदेशी शब्द प्रयुक्त होते हैं। प्रयोग और अर्थ की दृष्टि से हिन्दी में विविध प्रकार के शब्द दिखाई देते हैं। उनमें से कुछ शब्द ऐसे हैं जिनमें अर्थ के भेद से वर्गीकरण किया जा सकता है। अर्थ-भेद की दृष्टि से हिन्दी के शब्दों का वर्गीकरण निम्न रूप में किया जाता है—

1. पर्यायवाची शब्द
2. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द-युग्म
3. विलोम शब्द
4. एकार्थक शब्द-युग्म
5. अनेकार्थक शब्द
6. वाक्यांश के लिए एक शब्द।

1. पर्यायवाची शब्द

समान अर्थ प्रकट करने वाले एक से अधिक शब्दों को 'पर्यायवाची' या 'समानार्थी' शब्द कहते हैं। सुन्दर, सशक्त और सुगठित वाक्य-रचना के लिए पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान आवश्यक है। यहाँ कुछ पर्यायवाची शब्द दिये जा रहे हैं—

1. **अलि-** भ्रमर, मधुप, मधुकर, षट्पद, भौंरा, मिलिन्द।
2. **अश्व-** घोड़ा, तुरंग, हय, वाजि, घोटक, तुरंगम, सैन्धव।
3. **अग्नि-** अनल, पावक, कृशानु, हुताशन, वह्नि, वैश्वानर, आग।
4. **अमृत-** सुधा, पीयूष, अमिय, अमी, सुरभोग।
5. **आँख-** नेत्र, चयन, चक्षु, दृग्, लोचन, अक्षि।
6. **असुर-** दैत्य, दानव, राक्षस, निशाचर, रजनीचर।
7. **आकाश-** व्योम, गगन, नभ, अम्बर, अनन्त, शून्य।
8. **आम-** रसाल, सहकार, आम्र।
9. **अरण्य-** वन, जंगल, कानन, विपिन, अटवी, कान्तार।
10. **अन्धकार-** अँधेरा, तम, तिमिर, तमिस्र।

11. आत्मा- चैतन्य, ब्रह्मा, सर्वज्ञ, विभु, क्षेत्रज्ञ।
12. आयु- अवस्था, वय, वयस्, उम्र, जीवनकाल।
13. आनन्द- उल्लास, मोद, प्रसन्नता, आह्लाद, प्रमोद, प्रहर्ष।
14. अर्जुन- सव्यसाची, पार्थ, धनंजय, गुडाकेश, गाण्डीवधारी।
15. इच्छा- अभिलाषा, कामना, मनोरथ, वांछा, स्पृहा, लिप्सा।
16. इन्द्र- सुरपति, देवराज, मघवा, पुरन्दर, शचीपति, सुरेश, पाकशासन, गोत्रभित्, पुरुहूत, शक्र।
17. ईश्वर- परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, परमेश्वर, भगवान्।
18. उन्नति- उत्थान, उत्कर्ष, प्रगति, अभ्युदय, विकास।
19. उत्पत्ति- उद्भव, जन्म, उद्गम, जनन, आविर्भाव।
20. उपवन- बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, आराम।
21. ऊँट- उष्ट्र, क्रमेलक, लम्बोष्ठ, महाग्रीव।
22. कान- कर्ण, श्रवणेन्द्रिय, श्रुति।
23. कपोत- कबूतर, पारावत, हारीत, रक्तलोचन।
24. कोयल- कोकिल, पिक, परभृत्, श्यामा, वनप्रिय।
25. कुत्ता- श्वान, शुनक, कुक्कुर, सारमेय, मृगारि, कूकर, सोनहा।
26. कृष्ण- माधव, मुकुन्द, दामोदर, गोपीनाथ, वासुदेव, कंसारि, मुरलीधर, मधुसूदन, यदुराज, द्वारिकाधीश।
27. कौआ- काक, वायस, बलिपुष्ट, करट, पिशुन, करटक।
28. कुबेर- यक्षराज, धनाधिप, राजराज, धनद, वित्तेश।
29. कोष- निधि, भण्डार, आकर, निकर, आगार।
30. कमल- जलज, पंकज, पद्म, उत्पल, सरोज, कंज, नलिन, पुष्कर, शतपत्र, अरविन्द, सरसिज, कुवलय, नीरज।
31. कनक- सोना, स्वर्ण, कंचन, हेम, हिरण्य, हाटक।
32. कपड़ा- वस्त्र, वसन, चीर, अम्बर, पट, परिधान।
33. कल्पवृक्ष- देवदारु, सुरतरु, मन्दार, पारिजात।
34. कष्ट- दुःख, वेदना, पीड़ा, व्यथा, खेद, क्लेश।
35. कामदेव- मन्मथ, मनोज, मार, अनंग, मनसिज, कन्दर्प, मदन।
36. किरण- रश्मि, कर, अंशु, मयूख, मरीचि, दीधिति।
37. केश- बाल, कच, कुन्तल, चिकुर, शिरोरुह।
38. क्रोध- रोष, रिस, अमर्ष, कोप।
39. खर- रासभ, गर्दभ, गधा, वैशाखनन्दन।
40. खल- दुष्ट, दुर्जन, धूर्त, कुटिल, नीच, पामर।
41. गंगा- भागीरथी, जाह्नवी, देवगंगा, त्रिपथगा, सुरसरि, मन्दाकिनी।
42. गणेश- विनायक, गजवदन, गणपति, गजानन, लम्बोदर, गणनायक।
43. गृह- घर, निकेतन, निकेत, सदन, आलय, आवास, मन्दिर, निलय।
44. गर्व- अभिमान, घमण्ड, दर्प, मद, अहंकार।
45. गुरु- आचार्य, अध्यापक, शिक्षक, उपाध्याय।
46. गौ- गाय, धेनु, सुरभि, माहेयी, पयस्विनी, दोग्धी।
47. चन्द्रमा- इन्दु, शशि, विधु, सोम, मयंक, सुधाकर, कलानिधि, सुधांशु।
48. चरण- पैर, पाद, पग, पद, पाँव।
49. चतुर- दक्ष, निपुण, कुशल, प्रवीण, चालाक।
50. चरित्र- आचरण, व्यवहार, आचार, शील, चाल-चलन।
51. छल- कपट, धोखा, ब्याज, ठगी, शठता।
52. जल- नीर, सलिल, तोय, वारि, पय, अप, अम्बु, उदक, जीवन।
53. जगत्- भव, जग, संसार, विश्व, जगती, लोक, दुनिया।

प्रश्न 10. पुत्र, चन्द्रमा और संसार के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–पुत्र—सुत, आत्मज, तनुज, तनय।
चन्द्रमा—शशि, विधु, मयंक, सुधांशु।
संसार—जगत्, भव, जग, विश्व।
प्रश्न 11. घर, कपड़ा और रात के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–घर—गृह, निकेतन आवास, सदन।
कपड़ा—वस्त्र, वसन, अम्बर, पट।
रात—निशा, रजनी, विभावरी, यामिनी।

2. विलोम शब्द

ऐसे शब्द जो परस्पर विरोधी या विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे– अमृत का विलोम शब्द विष है।

यहाँ पर कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्द दिये जा रहे हैं—

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अन्त	आदि	अथ	इति
अनुकूल	प्रतिकूल	अनुग्रह	विग्रह
अनुराग	विराग	अनुज	अग्रज
अर्वाचीन	प्राचीन	अस्त	उदय
अपकार	उपकार	अधम	उत्तम
आय	व्यय	आकाश	पाताल
आशा	निराशा	आस्तिक	नास्तिक
अधिक	न्यून	अगला	पिछला
अतीत	वर्तमान	अदेह	सदेह
अनाथ	सनाथ	अर्थ	अनर्थ
अक्षम	सक्षम	अल्प	अति
अधुनातन	पुरातन	अमृत	विष
अघ	अनघ	असीम	ससीम
अचेत	सचेत	आकर्षण	विकर्षण
आगत	अनागत	आदान	प्रदान
आदर	अनादर	आर्य	अनार्य
आस्था	अनास्था	आचार	अनाचार
आज्ञा	अवज्ञा	आयात	निर्यात

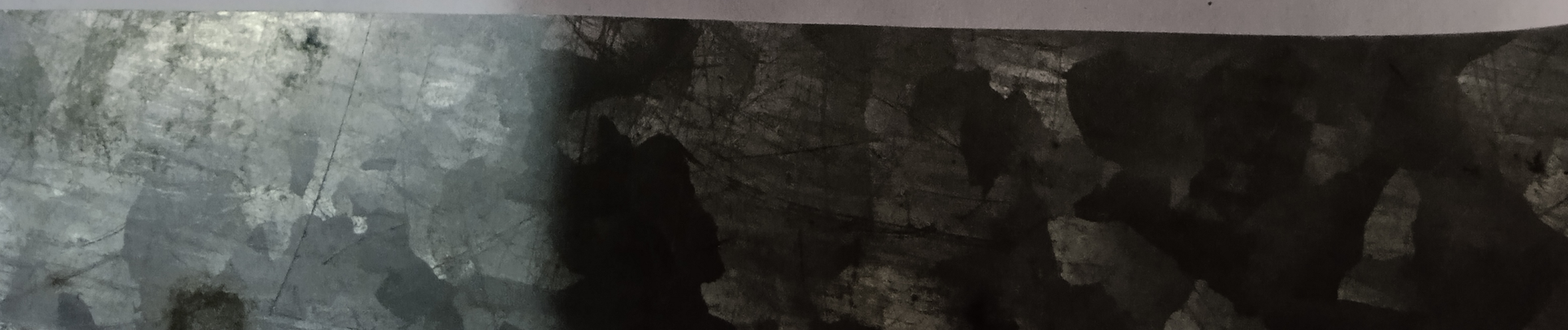

शब्द	विलोम
आरोह	अवरोह
आधा	पूरा
आहूत	अनाहूत
आदर्श	यथार्थ
आसक्ति	अनासक्ति
आविर्भाव	तिरोभाव
आवृत	अनावृत
आलस्य	अनालस्य
ईश्वर	अनीश्वर
इच्छा	अनिच्छा
उत्थान	पतन
उत्कृष्ट	निकृष्ट
उद्धत	विनीत
एकान्त	अनेकान्त
कृश	स्थूल
कृपण	उदार
कोमल	कठोर
अलभ्य	लभ्य
अजेय	जेय
अपेक्षित	अनपेक्षित
अपयश	सुयश
अपेक्षा	उपेक्षा
अकाल	सुकाल
अपराध	निरपराध
अकर्मक	सकर्मक
गुरु	लघु
घात	प्रतिघात
चंचल	स्थिर
चर	अचर
जय	पराजय
जातीय	विजातीय
जंगम	स्थावर
त्याग	भोग
दुःख	सुख
नूतन	पुरातन
निन्दा	स्तुति
प्रत्यक्ष	परोक्ष
मलिन	निर्मल
ममत्व	परत्व
विधवा	सधवा
सृष्टि	प्रलय
स्वाधीन	पराधीन

शब्द	विलोम
आतुर	अनातुर
आरोप	प्रत्यारोप
आरम्भ	समाप्ति
आर्द्र	शुष्क
आत्म	अनात्म
आमिष	निरामिष
आगमन	निर्गमन
इष्ट	अनिष्ट
इहलोक	परलोक
उन्नति	अवनति
उदार	अनुदार
उष्ण	शीत
ऐक्य	अनैक्य
कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कृष्ण	शुक्ल
कृतज्ञ	कृतघ्न
अपना	पराया
अदेय	देय
अग्र	पश्च
अनुलोम	प्रतिलोम
अक्षम	सक्षम
अर्थ	अनर्थ
आधार	निराधार
अल्पायु	दीर्घायु
अल्पज्ञ	बहुज्ञ
गौण	मुख्य
चेतन	जड़
चपल	गम्भीर
चतुर	मूर्ख
जन्म	मृत्यु
जीवन	मरण
तीव्र	मन्थर
दुर्जन	सज्जन
दुर्गम	सुगम
निद्रा	जागरण
निराकार	साकार
पण्डित	मूर्ख
मिथ्या	सत्य
वाद	प्रतिवाद
शुभ	अशुभ
सापेक्ष	निरपेक्ष
स्वस्थ	अस्वस्थ

2. **वर्तमान काल**–क्रिया के जिस रूप से उसके ... कहते हैं। इसके चार भेद होते हैं—

(i) सामान्य वर्तमान	–	वह पुस्तक पढ़ता है।
(ii) अपूर्ण वर्तमान	–	कृष्णा लेख लिख रही है।
(iii) सन्दिग्ध वर्तमान	–	कृष्णा लेख लिख रही होगी।
(iv) सम्भाव्य वर्तमान	–	कृष्णा शायद लिख रही हो।

3. **भविष्यत् काल**–क्रिया के जिस रूप से उसका व्यापार आने वाले समय में ज्ञात हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं—

(i) सामान्य भविष्यत्	–	कृष्णा खाना पकायेगी।
(ii) सम्भाव्य भविष्यत्	–	वह कल विद्यालय में पढ़े।

परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव

परसर्ग 'ने' सदा कर्त्ता के साथ ही आता है। इसके प्रयोग से क्रिया के रूप में अनेक परिवर्तन आ जाते हैं। इसके कुछ नियम इस प्रकार हैं—

(1) कर्त्ता की क्रिया 'ने' के प्रयोग के कारण सदा भूतकाल की होती है। जैसे—

(i) राम ने रावण का संहार किया।

(ii) राम ने रावण का संहार किया था।

(iii) राम ने रावण का संहार किया होगा।

(2) कर्त्ता के साथ 'ने' आने से क्रिया सदा सकर्मक होती है। जैसे—

(i) बालक ने दूध पिया।

(ii) गाँधीजी ने अन्याय का विरोध किया।

(iii) रमाकान्त ने पत्र पढ़ा।

(3) परसर्ग 'ने' का प्रयोग होने पर क्रिया सदा कर्त्तृवाच्य में होती है। जैसे—

(i) सुधा से गिलास टूट गया	सुधा ने गिलास तोड़ दिया।
(ii) पाकिस्तान से भारत जीत गया।	पाकिस्तान को भारत ने जीत लिया।

(4) अकर्मक क्रिया होने पर परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं होता है, अर्थात् 'ने' के प्रयोग से क्रिया सकर्मक ही प्रयुक्त होती है। जैसे—

(i) गुरुजी ने आगमन किया	— गुरुजी आये।
(ii) भिखारी ने आर्त-प्रार्थना की	— भिखारी आर्त-प्रार्थना करने लगा।

(5) परसर्ग 'ने' के कारण वाक्य में 'कर चुका', 'कर लिया' आदि का प्रयोग परिवर्तित हो जाता है। जैसे—

(i) मोहन खाना खा चुका है।	मोहन ने खाना खा लिया है।
(ii) अतिवृष्टि खेती को नष्ट कर चुकी।	अतिवृष्टि ने खेती को नष्ट कर दिया।
(iii) धोबी कपड़ा धो चुका।	धोबी ने कपड़े धो लिये।
(iv) रमेश विश्राम कर चुका।	रमेश ने विश्राम कर लिया।

(6) परसर्ग 'ने' के प्रयोग या अप्रयोग से वर्तमान काल के क्रिया-रूपों में अन्तर आ जाता है। यथा—

'ने' का प्रयोग	**'ने' का अप्रयोग**
(i) रामू ने खाना पका लिया है।	रामू खाना पका चुका।
(ii) हाथी ने पेड़ तोड़ दिया।	हाथी पेड़ को तोड़ चुका।
(iii) पाश्चात्य सभ्यता ने हमें पतित कर दिया है।	पाश्चात्य सभ्यता हमें पतित कर रही है।

(7) परसर्ग 'ने' के प्रयोग से भविष्यत्कालीन क्रिया-रूप बदल जाते हैं। जैसे—

(i) रमा खाना खा गई होगी।	रमा ने खाना खा लिया होगा।
(ii) दिनेश किताब रख गया होगा।	दिनेश ने किताब रख दी होगी।

(iii) रमेश धोती पहने हुए होगा। रमेश ने धोती पहनी हुई होगी।

(8) परसर्ग 'ने' के प्रयोग से अपूर्णतावाची क्रियाएँ पूर्णतावाची बन जाती हैं। जैसे—

(i) वह बच्चों से मार-पीट करता रहा। उसने बच्चों से मारपीट की थी।

(ii) वह कूड़ा सड़क पर फेंकता रहा। उसने कूड़ा सड़क पर फेंका।

(iii) मैं वह प्राकृतिक दृश्य देखता रहा। मैंने वह प्राकृतिक दृश्य देखा।

परसर्ग 'ने' के कुछ अन्य उदाहरण—

ने-रहित कर्त्ता पद	ने-सहित कर्त्ता-पद
1. मैं पढ़ने का निश्चय करता हूँ।	मैंने पढ़ने का निश्चय किया है।
2. प्रतिभा कविता लिखती थी।	प्रतिभा ने कविता लिखी।
3. बालक कहानियाँ सुनता रहा।	बालक ने कहानियाँ सुनीं।
4. माँ पुत्र को दूध पिला चुकी है।	माँ ने पुत्र को दूध पिला लिया है।
5. वह सारे अंगूर खा चुका होगा।	उसने सारे अंगूर खा लिए होंगे।
6. वीर कभी हार नहीं मानते।	वीरों ने कभी हार नहीं मानी।
7. छात्र प्रतिदिन व्यायाम करते थे।	छात्रों ने प्रतिदिन व्यायाम किया।
8. कवि कविता लिखता रहा।	कवि ने कविता लिखी।
9. कबीर उनकी आलोचना करते रहे।	कबीर ने उनकी आलोचना की।
10. मैं उत्सव में जाने का निश्चय कर चुका हूँ।	मैंने उत्सव में जाने का निश्चय कर लिया है।

अभ्यास प्रश्न

1. परसर्ग 'ने' के कारण क्रिया सदा·····में होती है—
   (क) सामान्य वर्तमान काल (ख) भूतकाल
   (ग) सन्दिग्ध वर्तमान काल (घ) भविष्यत्काल
2. परसर्ग 'ने' से युक्त क्रिया में होता है—
   (क) पूर्णता का भाव (ख) निरन्तरता का भाव
   (ग) अपूर्णता का भाव (घ) सम्भाव्यता का भाव
3. निम्नलिखित वाक्य में 'ने' परसर्ग के प्रयोग में जो परिवर्तन आया है, उसके परिवर्तित रूप का सही विकल्प बताइए—
   'मोहन खाना खा चुका है।'
   (क) मोहन ने खाना खाया। (ख) मोहन ने खाना खा लिया था।
   (ग) मोहन ने खाने को खा लिया। (घ) मोहन ने खाना खा लिया है।
4. 'सुधा से गिलास टूट गया।' इस वाक्य में परसर्ग 'ने' का प्रयोग करने से क्या परिवर्तन आयेगा?
   (क) सुधा से गिलास को तोड़ा गया।
   (ख) सुधा ने गिलास तोड़ दिया।
   (ग) सुधा द्वारा गिलास तोड़ा गया।
   (घ) सुधा ने गिलास को तोड़ा।
5. 'रमेश खाना खा चुका।' इस वाक्य में 'ने' परसर्ग का प्रयोग करने पर बनने वाले विकल्प को चुनिये—
   (क) रमेश से खाना खाया गया। (ख) रमेश ने खाना खाया होगा।
   (ग) रमेश ने खाना खा लिया। (घ) रमेश ने खाने को खाया।
6. परसर्ग 'ने' का अशुद्ध प्रयोग किसमें हुआ है?
   (क) गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन किया होगा। (ख) गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन किया था।
   (ग) गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन किया। (घ) गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन करा था।
7. परसर्ग 'ने' के योग से शुद्ध वाक्य-रचना है—

प्रश्न 14. निम्नलिखित विशेषणों की उत्तरा एवं उत्तमा अवस्था बताइए—
बहुत, महत्, कनिष्ठ, श्रेष्ठ, मधुर, कुटिल।

उत्तर—बहुत—बहुतर, बहुतम। महत्—महत्तर, महत्तम
कनिष्ठ—कनिष्ठतर, कनिष्ठतम। श्रेष्ठ—श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम।
मधुर—मधुरतर, मधुरतम। कुटिल—कुटिलतर, कुटिलतम।

प्रश्न 15. निम्नलिखित रेखांकित पदों के विशेषण रूप लिखिए—
(i) कश्मीर के सेब मीठे होते हैं।
(ii) बीकानेर की भुजिया स्वादिष्ट होती है।

उत्तर—(i) कश्मीरी सेब मीठे होते हैं।
(ii) बीकानेरी भुजिया स्वादिष्ट होती है।

3. परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव

परसर्ग

परिभाषा—वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के कारकीय सम्बन्ध को प्रकट करने वाले चिह्नों को **परसर्ग** कहते हैं। परसर्ग को कारक-चिह्न अथवा विभक्ति भी कहा जाता है। जैसे—
(i) शिक्षक ने छात्रों को पाठ पढ़ाया।
(ii) यह रमा की पुस्तक है।

इन वाक्यों में 'ने', 'को' तथा 'की' के द्वारा वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध दूसरे शब्दों से जोड़ा गया है। इसलिए परसर्ग अर्थात् कारक चिह्न हैं।

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप के द्वारा उसका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों (विशेषकर क्रिया) के साथ जाना जाता है, उसे **कारक** कहते हैं।

कारक-भेद—हिन्दी में कारक आठ माने जाते हैं। प्रत्येक कारक के लिए **परसर्ग** अर्थात् विभक्ति-चिह्न प्रयुक्त होते हैं। उनका स्वरूप इस प्रकार है—

कारक	परसर्ग (विभक्ति-चिह्न)
1. कर्त्ता	ने (या कोई भी चिह्न नहीं)
2. कर्म	को (या कोई भी चिह्न नहीं)
3. करण	से, द्वारा, के द्वारा, के साथ
4. सम्प्रदान	के लिए, को
5. अपादान	से (अलग होने अर्थ में)
6. सम्बन्ध	का, की, के
7. अधिकरण	में, पर
8. सम्बोधन	हे, अरे, ओ, अजी

परसर्ग 'ने' का प्रयोग

परसर्ग 'ने' का प्रयोग कर्त्ताकारक में होता है। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध होता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे—
(i) मोहन ने मीठा फल खाया।
(ii) मैंने खाना खा लिया था।